समसत्र-2 M.A.

<u>भारतेंदु युग की पत्रकारिता</u>

-डॉ० यशोधरा राठौर

छात्रों i आज मैं अपने व्याख्यान से भारतेंदु युग की पत्रकारिता से आपको अवगत कराना चाहूंगी

आपको ज्ञात होगा कि हिंदी यदि भारत के विराट व्यक्तित्व का समन्वय सूत्र है तो पत्रकारिता समय और समाज के विभिन्न ज्ञान की धाराओं और विचारों को जन-जन तक पहुंचाने की विशिष्ट कला है। जनवाणी हिंदी में भारतीय स्वतंत्रता के आंदोलनों और उसके उत्कर्ष की गाथाएं हैं यदि ,तो हिंदी की पत्रकारिता उसकी सशक्त सम वाहिका बनकर हमारे समक्ष प्रस्तुत होती हैं, जिसमें राष्ट्रीय एकता , युगीन भाव बोध ,समन्वय ,समाहार एवं शांति के स्वर हैं।

<u>मैथ्यू अर्नाल्ड</u> ने पत्रकारिता को शीघ्रता में लिखा जाने वाला साहित्य (journalism is a literature in hurry) कहा है ।साहित्य की अनेक विधाएं पत्र-पत्रिकाओं से निकल कर आई हैं ।भारतेंदु हरिश्चंद्र, पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी ,बालकृष्ण भट्ट ,प्रताप नारायण मिश्र ,बाबूराव विष्णु पराड़कर ,शिवपूजन सहाय, प्रेमचंद, निराला ,श्री कृष्ण देव प्रसाद गौड़ आदि के द्वारा लिखित स्तंभ सर्वकालिक साहित्य बन चुके हैं।

भारतेंदु युग की पत्रकारिता पर प्रकाश डालने के पूर्व आपको यह जान लेना चाहिए कि भारतेंदु के पूर्व भारतीय स्वतंत्रता के मद्देनजर पत्रकारिता की आवश्यकता को समझा जाने लगा था। हिंदी का प्रथम समाचार पत्र 30 मई, 1826 को श्री युगल किशोर मिश्र के संपादन में **<u>उदंत</u>**

मार्तंड के नाम से प्रकाशित हुआ जिसमें दो प्रकार की भाषा ब्रजभाषा और मध्य देशीय भाषा का प्रयोग किया गया था ।इस समाचार पत्र ने हिंदी गद्य के उस रूप की स्थापना की जो भारतेंदु के उदय से पहले मानक रूप में स्थापित हुआ।

इसके बाद राजा राममोहन राय की प्रेरणा से **बंगदूत** नामक पत्रिका कोलकाता के हेराल्ड प्रेस से साप्ताहिक पत्र के रूप में प्रकाशित हुआ, जिसके संपादक श्री नीलरत्न हालदार थे ।श्री नीलरत्न भारतीय पुनर्जागरण के अग्रदूत राजा राममोहन राय से बहुत प्रभावित थे ,जिन्होंने सन् 1815 में वेदांत सूत्रों का बांग्ला, अंग्रेजी, हिंदी में अनुवाद किया। राजा राममोहन राय हिंदी के आदि गद्य लेखकों में माने जाते हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार- आधुनिक हिंदी में लल्लू लाल जी लाल और सदल मिश्र के बाद राजा राममोहन राय पहले ऐसे लेखक थे जिन्होंने प्रामाणिक गद्य लेखन किया। 'बंगदूत' की स्थापना एवं उसके हिंदी खंड के प्रकाशन ने एक क्रांतिकारी परंपरा को जन्म दिया जो बाद में हिंदी की पत्रकारिता की विशेषता ही बन गई ,जिसका अनुसरण बाद के पत्रकारों खासतौर से भारतेंदु ने किया। प्रजा मित्र (1834) लोकमित्र (1835) बनारस अखबार (1845) ज्ञानदीप (1846) मालवा अखबार (1849) सुधाकर (1850) मार्तंड (1850) बुद्धि प्रकाश (1852) ग्वालियर गजट (1853) समाचार सुधा वर्षण (1804) सर्वहित कारक (1855) तत्वबोधिनी पत्रिका (1865) कवि वचन सुधा (1867) आदि सभी पत्र इस परंपरा को ही लेकर चले । इस दौर में हिंदी क्षेत्रों में जो भी पत्र निकले वे अधिकांश शिक्षा संबंधी, सामाजिक या क्रांतिकारी होते थे। इन्हीं दिनों आर्य समाज का भी प्रचार प्रारंभ हो गया था। हिंदू धर्म का आर्य समाज और सनातन धर्म के टकराव में दोनों ही पक्षों ने अपने मतों को प्रकट करने के लिए समाचार पत्रों का आश्रय लेना प्रारंभ कर दिया ये समाचार पत्र हिंदी एवं उर्दू दोनों ही भाषाओं में होते थे ।

सन् 1867 में हिंदी में एक ऐसी पत्रिका निकली जिसने एक नई धारा का प्रारंभ किया इस पत्रिका का नाम **कविवचनसुधा** था जिसके संपादक और प्रकाशक **भारतेंदु हरिश्चंद्र** थे। हिस्ट्री ऑफ इंडियन जर्नलिज्म में यह पुस्तक हिंदी पत्रकारिता की सही शुरुआत थी। यह एक विशुद्ध साहित्यिक पत्रिका थी जिसने अपने पहले ही अंक से दिशा-निर्देश दिए, जिसके परिणाम स्वरूप हिंदी जगत में एक ऐसी पत्रकारिता का प्रचलन हुआ जो किसी सामाजिक सुधार, जाति या मत विशेष के समर्थन में नहीं चल रही थी, बल्कि इसका उद्देश्य सभी पाठकों को चाहे वह किसी भी क्षेत्र, धर्म या जाति के हों। देश की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक समस्याओं से परिचित कराना था।

कविवचनसुधा हिंदी साहित्य और हिंदी पत्रकारिता के लिए अपने नाम को सार्थक करती हुई साक्षात अमृतवाणी सिद्ध हुई जिसके संपादक और प्रकाशक बाबू भारतेंदु हरिश्चंद्र जी बनारस के एक प्रसिद्ध रईस परिवार से थे। तब उनकी आयु लगभग 19 वर्ष की रही होगी उनकी विशिष्ट हिंदी सेवा से प्रसन्न होकर हिंदी जगत ने उन्हें **भारतेंदु** की उपाधि दी। भारतेंदु नाटककार, अनुवादक और विविध विषयों के विद्वान लेखक थे। उनका अधिकांश लेखन पत्रकारिता के माध्यम से ही हुआ। भारतेंदु ने एक ऐसी **लेखक मंडल / पत्रकार मंडल** का निर्माण किया जिसने विभिन्न हिंदीभाषी प्रदेशों में हिंदी की पत्र पत्रिकाएं निकालने और हिंदी में लिखने की जागृति प्रदान की।

भारतेंदु वस्तुतः आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाते हैं। हिंदी साहित्य में वे पहले रचनाकार थे जिनका कार्यकाल युग की संधि पर खड़ा था ।उन्होंने रीतिकाल की विकृत सामंती संस्कृति को छोड़कर

<u>साहित्य में एक स्वस्थ परंपरा की शुरुआत की, जिसे हिंदी साहित्य का आधुनिक काल या भारतेंदु युग कहा जाता है।</u>

भारतीय नवजागरण के अग्रदूत के रूप में भारतेंदु ने देश की गरीबी, पराधीनता ,शासकों के अमानवीय शोषण के चित्रण को मी अपनी पत्रकारिता का विषय बनाया ।हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने की दिशा में भी उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किए। भारतेंदु बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। हिंदी पत्रकारिता में ही नहीं, नाटक और काव्य के क्षेत्र में भी उनका बहुमूल्य योगदान रहा । वे एक जागरूक पत्रकार ,ओजस्वी गद्यकार ,कवि ,संपादक निबंधकार एवं कुशल वक्ता भी थे। उन्होंने महज 34 वर्षों की अल्पायु में विशाल साहित्य का सृजन किया और अपने आने वाले युग के पथ प्रदर्शक बन गए। उन्होंने अपने स्वाध्याय से संस्कृत, मराठी, बंगला ,गुजराती, पंजाबी और उर्दू भाषा और खड़ी बोली के उस रूप को प्रतिष्ठित किया जो सभी भाषाओं के रसों को लेकर संवर्धित हुआ है ।खड़ी बोली मैं ही उन्होंने अपने संपूर्ण साहित्य का सृजन किया। साहित्य सेवा के साथ निरंतर उनकी समाज सेवा और देश सेवा भी समग्र रूप से चलती रही ।हिंदी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल के प्रथम चरण 1850 से उन्नीस सौ तक को भारतेंदु युग के नाम से जाना जाता है ।इसे **नवजागरण काल, हिंदी साहित्य का आधुनिक काल** भी कहा जाता है । वस्तुतः यह काल **विचारों की संक्रांति का काल** था । इस युग के साहित्यकार तत्कालीन राजनीतिक सामाजिक धार्मिक आर्थिक सांस्कृतिक एवं भाषा संबंधी समस्याओं से इतने उलझे हुए थे कि साहित्य की कलात्मकता के लिए उनके पास समय ही नहीं था, इसलिए ज्यादातर उनके साहित्य में ,उनकी पत्रकारिता में यथार्थ की अनुभूति की अभिव्यक्ति ही मिल पाई और इसके लिए उन्होंने पत्रकारिता को अपना सशक्त साधन बनाते हुए उसमें नवीन संस्कारों का उन्मेष किया-

करहू काज सो राज आप केवल भारत हित
केवल भारत के हित साधन में दीजै चित्

इस प्रकार हम पाते हैं की 19वीं शताब्दी के 25 वर्षों के आदर्श के रूप में भारतेंदु की पत्रकारिता रेखांकित की जा सकती है। उन्होंने सन् 1867 में **कविवचनसुधा**, सन् 1873 में **भारतेंदु हरिश्चंद्रिका** सन् 1874 में **बालाबोधिनी** नामक पत्र निकाल कर पत्रकारिता के नए आयाम गढ़े । खड़ी बोली गद्य की स्थापना कर भारतेंदु ने हिंदी पत्रकारिता के आदि उन्नायक का स्थान पाया। उन्होंने जातीय चेतना, युगबोध और राष्ट्रप्रेम को देश की भूल भावना से जोड़ दिया, जिसके कारण उन्हें और उनके पत्रकार मंडल को अंग्रेजी सरकार की यातनाएं भी झेलनी पड़ी । भारतेंदु मंडल के द्वारा प्रकाशित पत्र **भारतमित्र** (1878) **सारसुधानिधि** (1889) **हिंदी प्रदीप , उचित वक्ता** सन (1880) का योगदान आज भी मुखर और बेबाक पत्रकारिता का प्रमाण बनकर हमारे समक्ष आता है । **हिंदी प्रदीप** का नामकरण भी भारतेंदु ने ही किया तत्कालीन प्रखर लेखकों को लेकर उन्हें प्रेरित कर उन्होंने एक भारतेंदु मंडल तैयार किया जिसमें **बालकृष्ण भट्ट ,प्रताप नारायण मिश्र ,बद्रीनारायण चौधरी, ठाकुर जगमोहन सिंह ,अंबिकादत्त व्यास राधाचरण गोस्वामी** आदि के नाम विशेष महत्वपूर्ण हैं।

निष्कर्ष के रूप में ऐसा माना जा सकता है कि भारतीय नवजागरण के अग्रदूत एवं आधुनिक हिंदी साहित्य के विद्वान एवं बहुआयामी व्यक्तित्व भारतेंदु हरिश्चंद्र ने युग प्रवर्तक के रूप में न केवल हिंदी साहित्य के विविध विधाओं को अग्रणी बनाया बल्कि हिंदी पत्रकारिता के माध्यम से लेखकों पत्रकारों का एक ऐसा समूह तैयार किया जिसने भारतीय स्वतंत्रता को प्राप्त करने एवं हिंदी साहित्य के संवर्द्धन में

महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, आधुनिक हिंदी साहित्य सदैव ही जिनका ऋणी रहेगा।